IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"बिहार की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन"

मेहिनी गौड़(डवीपदप ळंनत)
शोध छात्रा (संगीत विभाग)
दयालबाग षिक्षण संस्थान,
दयालबाग, आगरा–282005
निर्देषक : प्रो0 रष्मि श्रीवास्तव (**Prof. Rashmi Shrivastava)**

विष्व की विषिष्ट संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति प्राचीनतम होने के साथ–साथ काफी प्रगतिषील भी रही है, और आज जबकि अन्य प्राचीन सभ्यताएँ प्रायः नष्ट हो चुकी है, भारतीय सभ्यता और संस्कृति जीवित ही नहीं वरन् उपयोगी भी है। भौतिकवाद व आधुनिकवाद के इस युग में लोगों के बढ़ते हुए मानसिक तनाव और अन्तर्द्वन्द का एक मात्र समाधान हिन्दू–दर्षन तथा हिन्दू आध्यात्मवाद प्रदान करता है जो भारतीय संस्कृति की अपनी एक पृथक विषेषता है। भारतीय संस्कृति की यह विषेषता बहुत कुछ भारत की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण है। प्रकृति से संघर्ष करते हुए अथवा उससे उपलब्ध साधनों से लाभान्वित होकर जिस प्रकार प्रत्येक जन समूह अथवा देष किसी–न–किसी प्रकार प्रभावित होता है; ठीक उसी प्रकार भारत की प्राकृतिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप भारत का प्रत्येक राज्य भी अपनी–अपनी संस्कृति से अवष्य ही प्रभावित हुआ है।

प्राचीन काल से ही भरत विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सम्पन्न देष रहा है, जिसमें भिन्न संस्कृतियों का समन्वय रंग–बिरंगे गुलदस्ते की भाँति सुषोभित है। इस दिषा में यदि हम बिहार राज्य की ओर दृष्टिपात करें तो बिहार राज्य की भी अपनी अलग संस्कृति है, अर्थात् वहाँ का रहन–सहन, खान–पान, नृत्य, गायन, साहित्य, कला इत्यादि।

संस्कृति और अंग्रेजी का 'कल्चर' शब्द :– आजकल का संस्कृति शब्द–अंग्रेजी के कल्चर ;ब्नसजनतमद्ध शब्द का नाम अर्थवाची है। निरूक्ति की दृष्टि से 'कल्चर' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के कोलर ;ब्वसंतद्ध धातु से उत्पन्न कुल्टुरा ;ब्नसजनतंद्ध शब्द से हुई है जो संक्षेप में पूजा करना तथा कृषि सम्बन्धी कार्य क्रमषः बोधक है। कुछ विद्वान कल्चर ;ब्नसजनतमद्ध तथा कल्टीवेषन ;ब्नसजपअंजपवदद्ध अर्थात् कृषि कर्म में समानता की स्थापना करते हैं। अतः इस समानता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कृषि विद्या ;।हतपबनसजनतमद्ध के सिद्धान्तों के आधार पर जिस प्रकार पेड़–पौधों को सुविकसित करके अच्छी खेती तैयार की जाती है; ठीक उसी प्रकार मनुष्यों में भी मानवता की भावना को पुष्पित और पल्लवित करने के लिए जिस पद्धति का अनुसरण किया जाता है जो प्रक्रिया अपनायी जाती है, उसे संस्कृति कहा जाता है। अन्य शब्दों में किसी देष या समाज के विभिन्न जीवन व्यापारों या सामाजिक सम्बन्धों में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करने वाले आदर्षों को ही 'संस्कृति' कहते हैं।

विभिन्न विद्वानों ने संस्कृति के सम्बन्ध में अपने मत दिए हैं, जो इस प्रकार है :–

डॉ0 रामधारी सिंह दिनकर :– ''संस्कृति एक ऐसा गुण है, जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य स्वभाव में उसी प्रकार व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युग–युगान्तर में होता है।''

डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल :– ''संस्कृति का अर्थ है– संस्कार सम्पन्न जीवन। ये संस्कार मन, कर्म और वचन के द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं। विष्व के विराट मंच पर स्वयं प्रकृति इन संस्कारों को उत्पन्न करती है।''

श्री एडवर्ड बी. टायलर :– इनके मतानुसार ''संस्कृति ज्ञान, विष्वास, कला, नैतिकता, न्याय, रीति–रिवाज तथा प्रत्येक उपाजित गुण है ; जो मनुष्य समाज के एक सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।''

बिहार की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि :– बिहार के नाम से प्रसिद्ध देष का यह भू–भाग प्राचीन काल से ही कला, संस्कृति, आध्यात्म, दर्षन, विद्या, न्यास, शौर्य इत्यादि से सर्वगुण सम्पन्न रहा है। राजतंत्र से लेकर दर्षन और आध्यात्म तक में बिहार का जो योगदान भारत की संस्कृति, कला एवं अन्य क्षेत्रों के विकास में रहा है उसका भारत के विकास में सर्वश्रेष्ठ स्थान है। युगों–युगों से बिहार सभ्यता एवं संस्कृति के केन्द्र के रूप में भी देष–विदेष में ख्याति प्राप्त कर चुका है।

बिहार की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत साहित्य, संगीत, कला, भाषा, धर्म एवं आध्यात्म, दर्षन एवं षिक्षा आदि का प्रचुर विकास हुआ है, जो उल्लेखनीय है :–

साहित्य :– साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में बिहार राज्य की देन अद्वितीय है। भारतीय साहित्य के भण्डार को बिहार के साहित्यकारों ने सुषोभित करने का अथक प्रयास किया है। काव्य शास्त्र एवं श्रृंगार के क्षेत्र में भी बिहार में 'प्रसन्नराघव', 'काव्यप्रदीप', 'रसमंजरी', 'रसिक सर्वस्व', 'अनर्घराघव' तथा संगीतषास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ 'संगीत सर्वस्व' की रचना हुई।

आज के हिन्दी साहित्यकारों में से अनेकों साहित्यकार जैसे– राधिकारमण सिंह, नार्गार्जुन, रामधारी सिंह 'दिनकर', फणीष्वरनाथ रेणु इत्यादि बिहार के हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पष्चात् हिन्दी को जिस प्रकार बिना किसी विरोध एवं कठिनाई के बिहार की राज–भाषा और षिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है वह भी बिहार की जनता की हिन्दी प्रियता का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

संगीत :– बिहार की भूमि सदा ही संगीत से फली–फूली रही है। संगीत के अनेक प्रकारों की जन्मभूमि ही बिहार की पावन धरती है जैसे– 'नचारी', 'लगनी', 'फाग', 'चैत' एवं 'पूरबी'।

पटना, गया, मुंगेर, शाहाबाद, भागलपुर, दरभंगाएवं बेतिया बिहार में संगीत के प्रमुख केन्द्र थे। 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पटना के प्रसिद्ध संगीतज्ञ 'मुहम्मद रजा' ने राग–रागनियों का नवीन रूप में विन्यास किया और 'ठाठ' नामक वाद्ययंत्र का निर्माण किया। उनकी पुस्तक 'नग़माते–ए–आसफी' संगीत की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

कला :– भारतीय कला का आरम्भ बिहार राज्य से ही हुआ है। नालन्दा, विक्रमषिला, राजगृह, वैषाली, पाटलिपुत्र इन प्राचीन, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के पुरातत्व विषयक सामग्रियाँ – षिलालेख, खंडहर, भग्नावषेष इत्यादि इस बात की पुष्टि करते हैं, कि शताब्दियों तक समस्त भारत की राजनीति, धर्मनीति, चिन्तन–मनन एवं संस्कृति बिहार द्वारा प्रवाहित होती रही है।

भाषा :– बिहार में बोली जाने वाली बालियों और भाषाओं में मैथिली, अंगिका, वज्जिका, मगही एवं भोजपुरी है। इनके अतिरिक्त थारू, कुरमाली, नागपुरिया इत्यादि बोलियाँ भी हैं। पहाड़ी भाषाओं में प्रमुख है– खड़िया, उरांव, मुंडारी, संताली इत्यादि। ये भाषाएँ और बोलियाँ प्रमुख जनपदों में व्यवहृत होती आयी है। इनका नाम भी प्रमुख जनपदों के नाम के आधार पर ही हुआ है। मैथिली भाषा बिहार की बोलियों में प्रथम स्थान पर है। 'लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' के अनुसार मैथिली भाषाओं की संख्या 1 करोड़ है। इसमें अंगिका एवं वज्जिका भाषा भी सम्मिलित हैं। बिहार की समस्त भाषाओं में मैथिली का साहित्य बहुत वृहद एवं समृद्धषाली है।

धर्म एवं आध्यात्म :– धर्म के क्षेत्र में बिहार की भूमि ने ना केवल विभिन्न धर्मों एवं भावधाराओं का विकास किया अपितु उनकी पुष्टि भी की और विष्व के कोने–कोने में इन धर्मों और भावधाराओं का संदेष पहुँचाकर मानव जाति का कल्याण किया। भगवान बुद्ध एवं महावीर जैसे धर्म प्रर्वतकों ने अपनी वाणी और धर्मोपदेष द्वारा प्रेम, अहिंसा, परधर्म, सहिषणुता एवं करूणा का प्रचार किया।

आध्यात्मिक विद्या एवं दर्षन शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान 'याज्ञवलक्य' के आध्यात्म विद्या सम्बन्धी शास्त्रार्थों का उल्लेख अनेक ब्रह्म (ब्रह्मण) ग्रथों एवं उपनिषदों में मिलता है। विदेह वंष के राजा जनक की राजसभा में महर्षि याज्ञवलक्य सर्वप्रधान थे। याज्ञवलक्य ने अपनी विदुषी पत्नी 'मैत्रेयी' को आध्यात्म तत्व का जो उपदेष दिया था उसका उल्लेख 'वृहदारण्यकोपनिषद' में मिलता है।

दर्षन :– दर्षन के क्षेत्र में भी बिहार का नाम अग्रणीय है दर्षन के प्रकाण्ड पण्डित 'राजा जनक' का नाम सर्वविख्यात है। मिथिला के दरभंगा जिले के दाढ़ी गांव के निवासी वाचस्पति मिश्र का नाम

भारतीय दर्षन के इतिहास में सर्वप्राचीन है। इनका छह दर्षनों पर समान अधिकार होने के कारण इन्हें 'षडदर्षन वल्लभ' भी कहा जाता है। इन्हें तात्पर्याचार्य भी कहा गया है।

षिक्षा :– बिहार में अनेक बौद्ध एवं जैन धर्म के केन्द्र हैं, जो विष्वविख्यात हैं और भगवान बुद्ध तथा भगवान महावीर की महिमा का बखान कर रहे हैं। बिहार स्थित नालंदा विष्वविद्यालय में विद्या एवं ज्ञान विज्ञान के अध्ययन, अनुषीलन के लिए केवल भारत के ही प्रत्येक भाग से नहीं अपितु सुदूर पूर्व के देषों से भी छात्र आया करते हैं। इन षिक्षण संस्थाओं से ही विद्या एवं ज्ञान की अनेक धारायें प्रवाहित होकर भारत और भारत के बाहर के देषों में फैली है।

नालंदा और विक्रमषिला विष्वविद्यालय के प्रकाण्ड विद्वानों, पंडितों, अध्यापकों ने विदेषों में भी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संदेष पहुँचाया था।

निष्कर्षतः – अतः बिहार की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अवलोकन के उपरांत यह ज्ञात होता है कि बिहार राज्य प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणीय रहा है चाहे वो धर्म हो, षिक्षा हो या संगीत हो प्रत्येक क्षेत्र में बिहार ने प्राचीन काल से ही अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **उपाध्याय डॉ0 कृष्णदेव – लोक संस्कृति की रूपरेखा**
2. **वर्मा डॉ0 गायत्री – कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति**
3. **गुप्ता डॉ0 रूचि – भारतीय संस्कृति शाष्वत जीवनदृष्टि एवं संगीत**
4. **सिंह गंगाशरण – बिहार एक सांस्कृतिक वैभव**